ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 PP. NO.- 144-146
ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

गुट निरपेक्षता (प्रासंगिकता–शीत युद्धोत्तरकाल में)

डॉ0 मृत्युंजय सिंह

प्र0 अ0–राजनीति विज्ञान, प्रा0 वि0 दहलवा विकाश खंड भदैया–सुल्तानपुर (उ0प्र0), भारत

Received-30.07.2022, Revised-06.08.2022, Accepted-10.08.2022 E-mail:mrityunjay.singh1978@gmail.com

सारांशः – *द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूरोप में पल्लवित एवं पुष्पित शीत युद्ध के प्रभाव से अपने को बचाने हेतु एशिया एवं अफ्रीका के अनेक नवोदित राष्ट्रों ने गुट–निरपेक्षता के विचार को जन्म दिया तथा दो दशकों के भीतर इस विचार धारा ने एक अवधारणा का रूप ले लिया।*

गुटनिरपेक्ष आन्दोलन की उत्पत्ति का कारण कोई संयोग मात्र नहीं था, अपितु यह सुविचारित अवधारणा थी। इसका उद्देश्य नव स्वतन्त्र राष्ट्रों की स्वाधीनता की रक्षा करना एवं युद्ध की संभावनाओं को रोकना था, अर्थात् किसी राष्ट्र द्वारा उपनिवेशवाद से मुक्त होकर पुनः 'नव उपनिवेशवाद' के शिकंजे में दबने से बचाना था।

गुटनिरपेक्षता एक विचारधारात्मक प्रत्यारोपण नही था, अपितु यह अपने विकास हेतु नवोदित देशों की समान आन्तरिक समस्याओं, गरीबी, भुखमरी एवं स्वतन्त्र विदेशनीति के साथ ही साथ साम्राज्यवादी उपनिवेशवादी एवं मानव स्वतन्त्रता के प्रति नव स्वतन्त्र देशों का एक उद्घोष था। गुट निरपेक्षता की मूल भावना निर्णय लेने की स्वतन्त्रता रही है। प्रत्युत् यह अपनी परिस्थितियों, आवश्यकताओं एवं समान आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक राजनैतिक परिस्थितियों का परिणाम रहा है। गुटनिरपेक्षता की नीति तटस्थता की नहीं अपितु निष्पक्षता की नीति का अवलम्बन करती रही है। इस सन्दर्भ में जार्ज लिस्का महोदय लिखते हैं, "किसी विकास के सन्दर्भ में यह जानते हुए कि कौन सही है और कौन गलत है, किसी का पक्ष लेना तटस्थता है किन्तु असंलग्नता या गुट निरपेक्षता का अर्थ है–सही और गलत में भेदकर सदैव सही नीति का समर्थन करना।"

गुटनिरपेक्षता तटस्थता नहीं रही है, अपितु निष्पक्षता के साथ ही साथ सक्रिय अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थितियों में हस्तक्षेप रही है। इसकी हस्तक्षेप की प्रकृति शान्तिकालीन ही नहीं अपितु यह अशान्तकालीन समयों में भी विश्व ने देखा है।संयुक्त राष्ट्र संघ के अन्तर्गत विश्व व्यवस्था के शान्ति अनुसंधान में इसके सक्रिय एवं निष्पक्षताकारी हस्तक्षेप को विश्व ने महसूस किया है।

कुंजीभूत शब्द– पल्लवित, नवोदित, गुट–निरपेक्षता, आन्दोलन, सुविचारित अवधारणा, स्वाधीनता, संभावनाओं, निष्पक्षता।

गुटनिरपेक्षता एक सकारात्मक अवधारणा रही है। यह शान्ति अनुसंधान के साथ राष्ट्रों के मध्य समानता एवं न्याय पर आधारित परस्पर सहयोग तथा मानव कल्याण हेतु आर्थिक विकास जैसे मुद्दों के प्रति सकारात्मक रूप से वचन बद्धता रही है। नवस्वतन्त्र देश अन्योन्याश्रित विश्व में स्वतन्त्रता और समता की स्थिति पाने की आकांक्षा से प्रेरित रहे हैं, इसकी प्रवृत्तियां सार्वभौमिक विकास की रही हैं, इस आन्दोलन ने विश्वव्यापी निर्धनता दूर करने का भी विशेष प्रयत्न किया है।

यू0एन0ओ0 के महासचिव 'पेरेजदिक्वयार' ने 'नाम' को विश्व की छः घटनाओं की सूची में रखा है जिसने हमारे युग को ही बदल दिया है। वहीं पर भारतीय चिंतक, रशीउद्दीन खान ने गुट निरपेक्षता को विश्व व्यवस्था के परिवर्तन एवं शान्ति अनुसन्धान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण परिवर्त्य के रूप में स्वीकार किया है।

अपने छोटे से राजनीतिक काल में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन ने बहुत महत्वपूर्ण उपलब्धियों को प्राप्त किया है। परन्तु इसके कुछ सार्वकालिक लक्ष्य भी रहे हैं, जिन्हें प्राप्त करने के लिए उसने सदैव प्रयास किया है।

नेहरू ने 'फारेनअफेयर्स' 1963 के एक अंक में लिखा है कि"गुट निरपेक्षता सभी राष्ट्रों के प्रति मैत्री मात्र एवं किसी भी सैन्य गुट से समझौता न करने की नीतियों को संक्षेप सार प्रस्तुत करती है तथा मूल रूप से गुट निरपेक्षता का अर्थ अपना कार्य करने की स्वतंत्रता से है जो सम्पूर्ण स्वतंत्रता का ही अंग है।"

गुटनिरपेक्षता की अपनी कुछ मूल प्रवृत्ति रही है, जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में यथा स्थिति में परिवर्तन की ओर, शस्त्रों की होड़ के स्थान पर विकास की ओर, गुटबन्दी से सह अस्तित्व की ओर तथा एक विश्व की भावना की ओर ले जाना जहां अन्योन्याश्रियता एवं सह अस्तित्व के साथ ही शान्ति, समानता न्याय एवं मानवता के मूल्य विकसित हो सकें।

गुटनिरपेक्षता की अपने को किसी विशेष मामले या झगड़े से नहीं बल्कि अपनी निरपेक्ष नीति का दृढ़ता से पालन करने की नीति रही है, सन्धि विरोधी नीति का यह नवीन आयाम ही निर्दलता या गुट निरपेक्षता की विशिष्टता रही है। अन्तर्राष्ट्रीय सामरिक सन्धियों से विलग नही इस गुट निरपेक्ष नीति का तत्व रहा है। संक्षिप्तता में कहा जाए तो शीत युद्ध से पृथकीकरण ही गुटनिरपेक्षता का सार तत्व है।

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

विदेश नीति की स्वतन्त्रता गुटनिरपेक्षता का सार तत्व रहा है, अर्थात् गुटनिरपेक्षता प्रभुसत्ता का तत्व रही है। गुटनिरपेक्षता विश्व राजनीति का एक जनतान्त्रिक सिद्धान्त है। गुटनिरपेक्षता केवल अपने अन्तर्निहित हितों की संसिद्धि का साधन ही नहीं है, अपितु विश्व शान्ति की स्थापना का भी साधन है।

राष्ट्रहित के परिवर्तन में प्रयोग करने पर गुटनिरपेक्षता एक नीति के रूप में स्वीकार की जाती है और विश्व शान्ति के हित में प्रयोग किये जाने पर गुट निरपेक्षता को एक साधन कहा जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति एवं व्यवस्था के निर्माण के लिए गुट निरपेक्षता ने निशस्त्रीकरण एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों में अपने जनतान्त्रिक मूल्यों के निर्माण द्वारा विश्व शान्ति का पोषण किया है।गुट निरपेक्षता ने पूर्व और पश्चिम अथवा जनतन्त्र और साम्यवाद के बीच चल रहे विवाद को अस्वीकार करके यह सिद्ध कर दिया है कि गुट निरपेक्षता समसामयिक राष्ट्रवाद का सिद्धान्त नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रवाद का सिद्धान्त है। गुट निरपेक्षता संकुचित राष्ट्रहित एवं व्यापक अन्तर्राष्ट्रीय हितों के बीच सांमजस्य स्थापित करने के प्रयत्न का नाम है।

गुट निरपेक्ष देशों के 1990 दशक के पहले हुए सम्मेलनों में इसको संस्थात्मक स्वरूप देने के महत्वपूर्ण प्रयत्न हुए हैं। यह आवश्यकता महसूस की जाती रही है कि बिना संस्थात्मक स्वरूप के गुट निरपेक्षता की क्रियाात्मकता को नीतिगत निर्णय तक नहीं पहुँचाया जा सकता है। शीत युद्ध कालीन गुट निरपेक्षता की भूमिका को लेकर संदेहास्पद स्थिति बनी हुई थी। यह केवल विचारधारात्मक व्यवस्था आधारित विश्व व्यवस्था का अंतहीन हीं था अपितु द्वि–ध्रुवीय विश्व व्यवस्था में क्रान्तिकारी परिवर्तन भी था जिसने इतिहास बदल दिया।

प्रासंगिकता—वस्तुतः शीतयुद्ध की प्रतिक्रिया स्वरूप भी गुट निरपेक्षता का उदय माना जाता है और जब शीतयुद्ध समाप्त हो गया तो गुट निरपेक्षता की आवश्यकता पर प्रश्न उठने लगे, इसको भी समाप्त करने के लिए राजनीतिक बहसें चलने लगीं, गुट निरपेक्षता की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिह्न लगाये जाने लगे। विश्व में इसकी प्रासंगिकता पर विचार होने लगे, आज गुट निरपेक्षता वहाँ पर आकर खड़ा हो गया, कि उसे कहाँ जाना है उसकी नवीन दिशा क्या है यह सब एक ज्वलंत प्रश्न के रूप में उभरा है। वस्तुतः गुट निरपेक्षता की प्रासंगिकता आज भी बनी हुई है। शीतयुद्ध के बाद 1992 में हुए जकार्ता शिखर सम्मेलन ने इसके समाप्त होने की आकांक्षाओं को समाप्त कर दिया है। इस सम्मेलन में निम्न लक्ष्य प्रदर्शित हुआ।

"युद्ध दरिद्रता, असहिष्णुता और अन्याय से रहित एक नई विश्व व्यवस्था की शान्तिपूर्ण सह अस्तित्व के सिद्धान्तों और सच्ची अंत निर्भरता पर आधरित दुनिया की सामाजिक व्यवस्थाओं और संस्कृतियों की विविधता को मानकर चलने वाले संसार की रचना के प्रति गुट निरपेक्ष आन्दोलन की प्रतिबद्धता है।" इस शिखर सम्मेलन में वैश्विक परिवर्तनों के अनुरूप गुट निरपेक्षता की नवीन भूमिकाओं में परिवर्तन हुआ है।

संसाधनों के समतापूर्ण वितरण, सूचना तकनीकि जैव संरक्षण सूचना निर्गम की श्रिप्रता, सेवाओं के अन्तर्राष्ट्रीय प्रवाहन आदि संप्रत्ययों ने गुट निरपेक्षता को नवीन आयामों पर सोचने के लिए विवश किया है। शीत युद्धोत्तर विश्व व्यवस्था में नवीन आर्थिक शीत युद्ध प्रारम्भ हुआ है। अर्थव्यवस्था के खगोलीय स्वरूप में आर्थिक क्षेत्रीकरण हुआ सांस्कृतिक नव साम्राज्यवाद ने सहमति निर्माण केन्द्रों का परिचालन व्यवस्था में किया है।

उत्तर–दक्षिण आर्थिक संवाद, विकसित देशों की हठ धर्मिता के कारण आज असफल हुआ है। गुट निरपेक्ष देशों ने अपने समान आर्थिक विकास हेतु दक्षिण–दक्षिण संवाद की आर्थिक विकास हेतु दक्षिण–दक्षिण संवाद की आर्थिक अवधारणा को विकसित किया है। 1990 के बाद विश्व व्यवस्था के आर्थिक हितों के लिये विश्व व्यापार संगठन को लाया गया है। इसमें विकसित देश अपने आर्थिक एवं राष्ट्रीय हितों के लिए आर्थिक नीतियों को प्रभावित कर रहे हैं।

विश्व व्यापार संगठन के तहत बौद्धिक सम्पदा अधिकार के तहत आर्थिक उपनिवेशवाद को संरक्षित करने का प्रयत्न किया गया है। विश्व व्यापार संगठन विश्व बैंक, अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, महासभा सुरक्षा परिषद से सम्बन्धित संस्थाओं ने जिस प्रकार पश्चिमी देशों में अपना एक गुट बनाकर दबाव समूह के रूप में कार्य किया है। गुट निरपेक्षता की नीति रही है कि इन संस्थाओं में जनतान्त्रिक मूल्यों व भावनाओं के अनुरूप संगठन का पुनर्निर्माण किया जाए तथा विकासशील देशों का समता आधारित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित कराया जाए।

भूमण्डलीयकरण के इस नवीन दौर में जिस प्रकार से सांस्कृतिक साम्राज्यवाद का प्रत्यय छाया हुआ है उससे सांस्कृतिक समरूपीकरण हुआ है। हमें समरूपीकरण की इस प्रवृत्ति से हटना होगा जो गुट निरपेक्षता की मूल संस्कृति है। उसके मूल्यों की रक्षा करना गुटनिरपेक्ष देशों का नवीन दायित्व है क्योंकि गुट निरपेक्षता संस्कृतियों के समरूपीकरण के नहीं, अपितु समस्थानीकरण के समर्थक हैं।

विश्व व्यापार संगठन के संरक्षण के कारण विकसित देश अपने ज्ञान, अर्थ, अन्वेषण, अनुसंधान, अनुप्रयोग से शोषण कर रहे हैं। गुट निरपेक्ष देशों की जैविक विविधता का शोषण जिस प्रकार से विकसित देश कर रहे हैं, वह एक प्रकार का

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-15, No.- III, Issues-25, YEAR- July-Sept.-2022

'जैविक उपनिवेशवाद' है। इस उपनिवेशवाद से पौध विविधता और जैव विविधता दोनों को खतरा है। गुट निरपेक्ष देशों के सम्बन्ध में स्वाभाविक न्याय यही है कि उन्हें जैव विविधता के अध्ययन निष्कर्षण और वाणिज्यीकरण का अधिकार है।

परमाणु तकनीकि के विस्तारण के फलस्वरूप शक्ति का फैलाव हुआ है। इस शक्ति के फैलाव ने विश्व शान्ति के लिए खतरा भी पैदा किया है। इसके लिए सृजनात्मक राज नये गुट निरपेक्ष की नवीन संकटों जैसे शस्त्र नियन्त्रण, आणविक संकट प्रबन्धन, विश्व निशस्त्रीकरण समस्त आणविक परीक्षणों पर खगोलीय प्रतिबन्ध को सफल बनाना अपना लक्ष्य निर्धारित किया है।

गुट निरपेक्षता ने नवीन विनाशात्मक तकनीकि के गैर राज्य अभिकर्ताओं तक न पहुँचने के लिए भी एक नीति का प्रतिपादन संयुक्त राष्ट्रसंघ के अन्तर्गत करने का प्रयास किया है। वर्तमान में गुट निरपेक्ष आन्दोलन संयुक्त राष्ट्र के बाद विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक समन्वय और परामर्श का मंच है। इस समूह में वर्ष 2018 तक कुल 120 विकासशील देश शामिल थे। इसके अतिरिक्त इस समूह में 17 देशों और 10 अंतर्राष्ट्रीय संगठनों को पर्यवेक्षक का दर्जा प्राप्त है।

नवीन सांस्कृतिक साम्राज्यवादी आक्रमण सूचना एवं तकनीकि के संजालों की श्रियता, निर्णायकता और सूक्ष्म दुर्निवारता पर निर्मित है। यही नवीन सूचना की भू–राजनीति है, जो जीवन शैली में पैठ करके नये सांस्कृतिक मूल्यों का निर्माण करती है।

गुट निरपेक्ष देशों को अपनी सूचनात्मक संजाल की एक केन्द्रीकृत प्रणाली का विकास करना होगा तथा उन्हें एक समन्वित ब्यूरो की स्थापना करनी होगी। जिससे सूचना की श्रिप्रता का विस्तार वे अपनी नीतियों के निर्माण एवं क्रियान्वयन में कर सकें। विश्व बाजार की गति सूचना ने सौ गुनी तेज कर दी है। यही समयबद्ध स्पर्धा है, जिसमें गुट निरपेक्ष देशों को अपनी आर्थिक नीति में क्रान्तिकारी बदलाव करने होगें।

सम्प्रतिजनतन्त्र की स्थापना, मानवाधिकार, आतंकवाद नव साम्राज्यवाद नवीन तत्व है। जिसे पश्चिमी देश बच ही नहीं रहे हैं अपितु उन्हें स्थापित करते चल रहे हैं। यह एक ध्रुवीय विश्व व्यवस्था का नवीन विचारधारात्मक हमला है।

आज विश्व के समक्ष आतंकवाद, मानवाधिकार, लोक तान्त्रिक मूल्यों की अभिरक्षा, आत्म निर्णय, महत्वपूर्ण तत्व बना हुआ है। गुट निरपेक्ष देशों को अपने आन्दोलन में इन्हीं के सन्दर्भ में नीतियों का प्रतिपादन हीन हीं करना होगा, प्रत्युत्नवीन विश्व व्यवस्था के निर्माण में क्रियात्मक सहभागिता करनी होगी।

एक विचार के रूप में गुटनिरपेक्ष आन्दोलन कभी भी अप्रांसगिक नहीं हो सकता है। इसका कारण यह है कि सैद्धान्तिक तौर पर यह आन्दोलन आज भी अपने सदस्य देशों को उनकी विदेशनीति निर्धारित करने का आधार प्रदान करती हैं। जब तक राष्ट्र मौजूद है और उनकी स्वतन्त्र विदेश नीति पर चलने की प्रतिबद्धता है तब तक गुटनिरपेक्ष आन्दोलन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक स्थायी तत्व बना रहेगा। इसलिए इसकी प्रासंगिकता कल भी थी आज भी है और कल भी रहेगी।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. घई, यू. आर.–अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सिद्धान्त एवं व्यावहारिक पक्ष, न्यू एकेडेमिक पब्लिशिंग कम्पनी, जालन्धर 2005.
2. कुलश्रेष्ठ, के. के. कश्यप एस. पी.–अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति, चंद कम्पनी नई दिल्ली, 1973.
3. वेदालंकार, हरिदत्त–अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध की रूपरेखा, रंजन प्रकाशन गृह, नई दिल्ली, 1981.
4. पंत, पुष्पेश–अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध।
5. कुमार, महेन्द्र–अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति के सैद्धान्तिक पक्ष, शिव लाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, दिल्ली 1978.
6. राजन, एम.एस.–गुट निरपेक्षता, भारत और भविष्य विश्वविद्यालय दिल्ली, 1978.
7. मार्गेन्थाऊ, हंस जे.–राष्ट्रों के मध्य राजनीति, हरियाणा ग्रन्थ एकादमी, हरियाणा, 1976.

*****